भारत छोड़ो आन्दोलन

वर्ष 1939 के प्रारम्भ से ही पूरे विश्व पर युद्ध के बादल मंडराने लगे थे। इसी वर्ष अप्रैल माह से ही महात्मा गांधी भी देशव्यापी सत्याग्रह के अगले दौर पर गम्भीरता से विचार कर रहे थे। वे इस सत्याग्रह के प्रारूप पर चिन्तन में लीन थे। जैसे–जैसे विश्व दूसरे महायुद्ध की कगार पर पहुँचने लगा, वैसे ही भारत भी दुविधाग्रस्त स्थिति में आ गया।

गांधी जी की लेखनी तथा वाणी दोनों में ही एक नया ओज, एक नई ऊर्जा प्रतीत होने लगी थी। "भारत छोड़ो" आन्दोलन के विषय में वे 'हरिजन पत्रिका' में पाठकों तथा पत्रकारों के प्रश्नों के उत्तर के माध्यम से देशवासियों को अगले दौर के संघर्ष के लिए तैयार कर रहे थे। उनसे कुछ पाठकों ने पूछा "क्या आप ब्रिटिश शासकों को जाने के लिये कहकर जापान को भारत पर आक्रमण करने के लिये नहीं उकसा रहे हैं।"

गांधीजी 'हरिजन' के 3 मई अंक में अपने उत्तर में स्पष्ट कहते हैं: "नहीं, मैं ऐसा नहीं कर रहा हूँ। मेरा यह दृढ़ मत है कि यहाँ पर ब्रिटिश मौजूदगी ही जापानी आक्रमण को उकसा रही है। यदि ब्रिटिश समझदारी के साथ भारत छोड़ दें ताकि भारत अपने मामले खुद सुलझा सके तो जापान अपनी युद्ध योजना पर पुनः विचार कर सकता है। ब्रिटेन के इस क़दम से जापानी अचम्भित रह जाएंगे, ब्रिटेन के प्रति उनकी दबी घृणा भी कम हो जाएगी तथा भारतीय जन जीवन को भी इस दमघोंटू परिस्थिति से मुक्ति मिलेगी।"

एक प्रश्न जो अधिकतर पूछा जाता है वह है कि कैसे गांधीजी ने ऐसा आन्दोलन छेड़ा जिसमें विरोधी किसी भी प्रकार से किसी झेंप का शिकार हो।

महात्मा गांधी का कहना था "मैं केवल कांग्रेस ही नहीं बल्कि उन सभी की ओर से कह रहा हूँ जो देश की विशुद्ध स्वतंत्रता में विश्वास रखते हैं कि यदि मैं अभी यह कहूँ कि ब्रिटेन के लिए कोई झेंप नहीं है। ... अतः यदि मैं इस समय इस विचार को दबा देता तो वह शायद आत्मघाती होगा।"

कुछ ऐसी ही परिस्थितियों में 'भारत छोड़ो' आन्दोलन की पृष्ठभूमि तैयार हो रही थी। मांग यह थी कि ब्रिटेन यह घोषणा करे कि भारत अहिंसक तरीके से युद्ध के विरूद्ध प्रचार प्रसार करने के लिए स्वतन्त्र है और तब युद्ध के खिलाफ तो असहयोग आन्दोलन होगा किन्तु सरकार के विरुद्ध सविनय अवज्ञा आन्दोलन नहीं होगा। यदि यह मांग अस्वीकार हुई तो कांग्रेस के समक्ष ठोस क़दम उठाने के अतिरिक्त और कोई विकल्प नहीं है।

गांधी जी की दलील यह थी कि ब्रिटेन में भी युद्ध विरोधी लोगों को जबरन सेना में भर्ती नहीं किया जाता है, और उन्हें अपनी बात खुलकर कहने की आज़ादी भी प्राप्त थी। हां, उन्हें यह अधिकार कदापि नहीं था कि वे युद्ध में विश्वास रखने वालों को किसी भी प्रकार रोक सकें। परन्तु भारत की स्थिति अलग थी। गांधी जी ने वाइसरॉय को स्पष्ट बता दिया था कि उनके द्वारा भारत को दी गईं रियायतें या आश्वासन पर्याप्त नहीं थे। यदि कांग्रेस को मरना ही है तो उसके लिए शान्तिपूर्ण तरीक़ों पर अपनी पूरी आस्था का ऐलान करते हुऐ मरना अधिक सराहनीय होगा।

इस ऐलान के साथ ही हुआ देशव्यापी सत्याग्रह अभियान का उद्घाटन। जो प्रारम्भ में सांकेतिक मात्र ही था, यानि व्यक्तिगत सत्याग्रह। गांधी जी ने इसके लिये कड़े नियम बनाए तथा एक शपथ भी तैयार की। वे इस बार के अभियान में उत्कृष्टता देखना चाहते थे। उन्होंने स्पष्ट किया कि वे स्वयं सविनय अवज्ञा में भाग नही लेंगे ताकि ब्रिटिश सरकार को असमंजस मे न पड़ना पड़े। प्रथम व्यक्तिगत सत्याग्रही के रूप मे उन्होंने विनोबा भावे का चयन किया।

परन्तु बहुत ही जल्दी व्यक्तिगत सत्याग्रह ने एक विशाल जन आन्दोलन का स्वरुप ले लिया। ऐसे में गांधीजी ने इसे तुरन्त स्थगित करने का निर्णय लिया। चौरी–चौरा काण्ड के बाद ऐसा उन्होंने दूसरी बार किया था। उस समय असहयोग आन्दोलन को समाप्त कर देने के गांधीजी के निर्णय को जवाहरलाल नेहरू तथा कई नेताओं ने सही नहीं माना था। परन्तु गांधीजी ने इसे एक 'हिमालय जितनी बड़ी भूल' की संज्ञा दी थी।

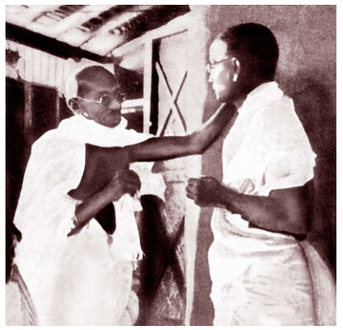

बहुत पहले जब किसी ने गांधीजी से कहा था कि इतिहास में पहले कभी सत्य और अहिंसा पर आधारित जन आन्दोलन का कोई उदाहरण नहीं है– तो उन्होंने कहा कि इस बात से उन्हें "कोई फ़र्क नहीं पड़ता"। 1942 के आन्दोलन के पूर्व जब वे कर्नाटक से बम्बई आये तब कार्यकर्ताओं में से एक ने कहा कि "इतिहास में एक भी उदाहरण नहीं है जहाँ अहिंसा द्वारा स्वराज–प्राप्ति हुई हो।"

गांधी जी मुस्कुराए और बोले: "हम नया इतिहास लिख रहे हैं।" इससे यह स्पष्ट होता है कि न केवल जन संघर्षों में सत्याग्रह का प्रयोग करने वाले वे सर्वप्रथम थे बल्कि वे यह भली–भांति जानते थे कि यह एक मौलिक क्रान्तिकारी कदम है।

दिसम्बर 1941 में जापान ने पर्लहार्बर पर हमला किया। इसी दौरान भारत में सर स्टैफर्ड क्रिप्स का आगमन हुआ जो देश के नेताओं के साथ मिल कर स्थिति का समाधान करना चाहते थे। सर क्रिप्स के प्रयासों से ही रूस अन्ततः युद्ध में शामिल होने को राज़ी हुआ था। इन्हें चर्चिल के उत्तराधिकारी के रुप में देखा जा रहा था। परन्तु भारत में उनके प्रस्तावों में स्वीकार की जाने वाली कोई बात नहीं थी और गांधी जी ने इन्हें 'पोस्ट डेटेड चैक' की उपाधि दी। सर स्टैफर्ड क्रिप्स की यात्रा विफल रही।

ऐसा ही मनोवैज्ञानिक क्षण में गांधी जी ने 'भारत छोड़ो' आन्दोलन छेड़ा। 'करो या मरो' के मन्त्र से उन्होंने देश में एक बार फिर नयी चेतना भर दी।

वर्ष 1942 के 8 अगस्त को कांग्रेस द्वारा भारत छोड़ो प्रस्ताव पारित किया गया और गांधी जी ने कहा "हमें दुनिया का सामना निर्भीक होकर शान्ति से करना है भले ही आज खुद दुनिया की नज़रें रक्तरंजित हैं।" उन्होंने देशवासियों से कहा कि वे आगे बढ़ें और स्वाधीनता की बलिवेदी पर प्राणों को न्यौछावर कर दें।

8 अगस्त 1942 को कांग्रेस ने बम्बई में अपनी बैठक में कार्यकारी समिति के प्रस्तावों पर विचार विमर्श कर उनका अनुमोदन दिया। कांग्रेस ने अपने वक्तव्य में कहा "कांग्रेस कमेटी यह निर्णय लेती है कि भारत की स्वाधीनता के अधिकार प्राप्ति के लिये अहिंसक पद्धति पर आधारित जन–आन्दोलन आरम्भ किया जाए, उस अहिंसक शक्ति को आधार बनाकर जो पिछले बाइस वर्षों के शान्तिपूर्ण संघर्ष को संचालित कर रही है। स्वाभाविक है कि यह संघर्ष महात्मा गांधी के नेतृत्व में ही संचालित होगा।"

गांधीजी ने अपने सम्बोधन में कहा कि उन्हें कोई जल्दी नहीं हैं और वे वाइसरॉय से मिलकर स्थिति का हल ढूंढ़ना चाहेंगे। परन्तु अगले ही दिन 9 अगस्त की भोर में गांधीजी और कार्यकारी समिति के सभी सदस्य गिरफ्तार कर लिये गये। एक सप्ताह के भीतर कांग्रेस के प्रत्येक महत्वपूर्ण व्यक्ति को बन्दी बना लिया गया। इसके बाद शुरू हुआ दमन–चक्र जिसमें निरीह, शान्तिपूर्ण संघर्ष में लगे जन–मानस पर अत्याचारों की झड़ी लग गई। इसमें महिलाएं भी हज़ारों की संख्या में कूद पड़ीं। एक नाम जो सबकी जुबां पर था वह है अरुणा आसफ अली का। आँकड़ों के अनुसार इस दौरान लगभग 2000 लोगों ने प्राण गँवाए, 600 घायल हुए और क़रीब 15 लाख रूपये जुर्माना किये गए। घरों को जलाने, लूटने, पुलिस तथा सेना के क्रूर अत्याचारों का तो कोई दस्तावेज़ है ही नहीं। परन्तु इसके बावजूद पूरा देश "अंग्रेज़ों भारत छोड़ो" के नारों से गूंजता रहा।

पूरे भारत में जन–जागृति और जन विद्रोह की अहिंसक लहर ने "भारत छोड़ो" आन्दोलन को विश्व इतिहास में अनोखा स्थान दिला दिया। जिस प्रकार देश की जनता ने क्रूर अत्याचार के सामने भी अहिंसा का साथ नहीं छोड़ा, देश के हर बड़े नेता के बन्दी बनाए जाने के बावजूद शान्तिपूर्ण तरीक़े से आन्दोलन जारी रखा यह बात वास्तव में अभूतपूर्व है। सत्याग्रह के, देश के स्वाधीनता संग्राम के इतिहास के एक अत्यन्त महत्वपूर्ण अध्याय के रूप में भारत छोड़ो आन्दोलन सदा अविस्मरणीय रहेगा।